



Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



ANUGRAHA BHASHANAM

शास्त्रों, अच्छे जीवन के लिए सबसे सुरक्षित मार्गदर्शक



शास्त्रों मनुष्य को श्रेय मार्ग दिखाते हैं। हम अनुभव से जानते हैं कि जो व्यक्ति यथासंभव इस मार्ग पर चलता है, वह जीवन में सुखी रहेगा। जब मन इस बात को लेकर व्याकुल हो कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है तथा कोई कार्य अच्छा है या बुरा, तो शास्त्रों का अनुसरण करना सबसे अधिक लाभकारी होगा। मनुष्य को सही मार्ग पर चलने और बुराई से बचने के लिए शास्त्र अंतिम प्रमाण हैं।

Jagadguru Śankarācārya His Holiness Mahāsannidhānam Śrī Śrī Śrī Bhārati Tīrtha Mahāswāmiji Jan 1-2, 2013 @ Karimnagar Vijayayatra

गीता में श्रीकृष्ण परमात्मा कहते हैं:

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ।

ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥

किसी समय जो चीज़ धर्म मानी जाती है, परिस्थितियां बदलने पर वह अधर्म में बदल सकती है। इसलिए, शास्त्रों के अलावा और कुछ भी सही रास्ता नहीं दिखा सकता, ऐसा शंकर भगवद्पादाचार्य ने अपने भाष्यों में सराहनीय ढंग से कहा है।

अयं धर्मोऽयमधर्म इति शास्त्रमेव विज्ञाने कारणम् ।

यस्मिन् देशे काले निमित्ते च यो धर्मोऽनुष्ठीयते स एव देशकालनिमित्तान्तरेष्वधर्मो भवति ।

तेन शास्त्रादृते धर्माधर्मविषयं विज्ञानं न कस्यचिदस्ति ।

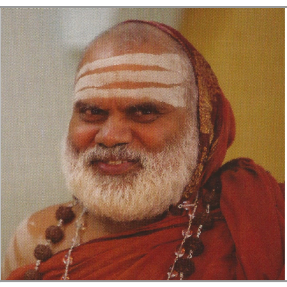
यदि कोई मनुष्य धर्म और अधर्म में अन्तर न जानते हुए मनमौजी जीवन व्यतीत करता है, तो उसकी बुद्धि तामसी मानी जाती है।

अधर्म धर्ममिति या मन्यते तमसाऽऽवृता ।

सर्वार्थान् विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ।

इसलिए, यदि लोग, अच्छे और बुरे में विवेक करते हुए, यथासंभव शास्त्रों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करें, तो वे इस लोक और परलोक में सुखी रहेंगे।

जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

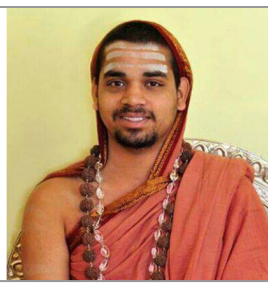


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



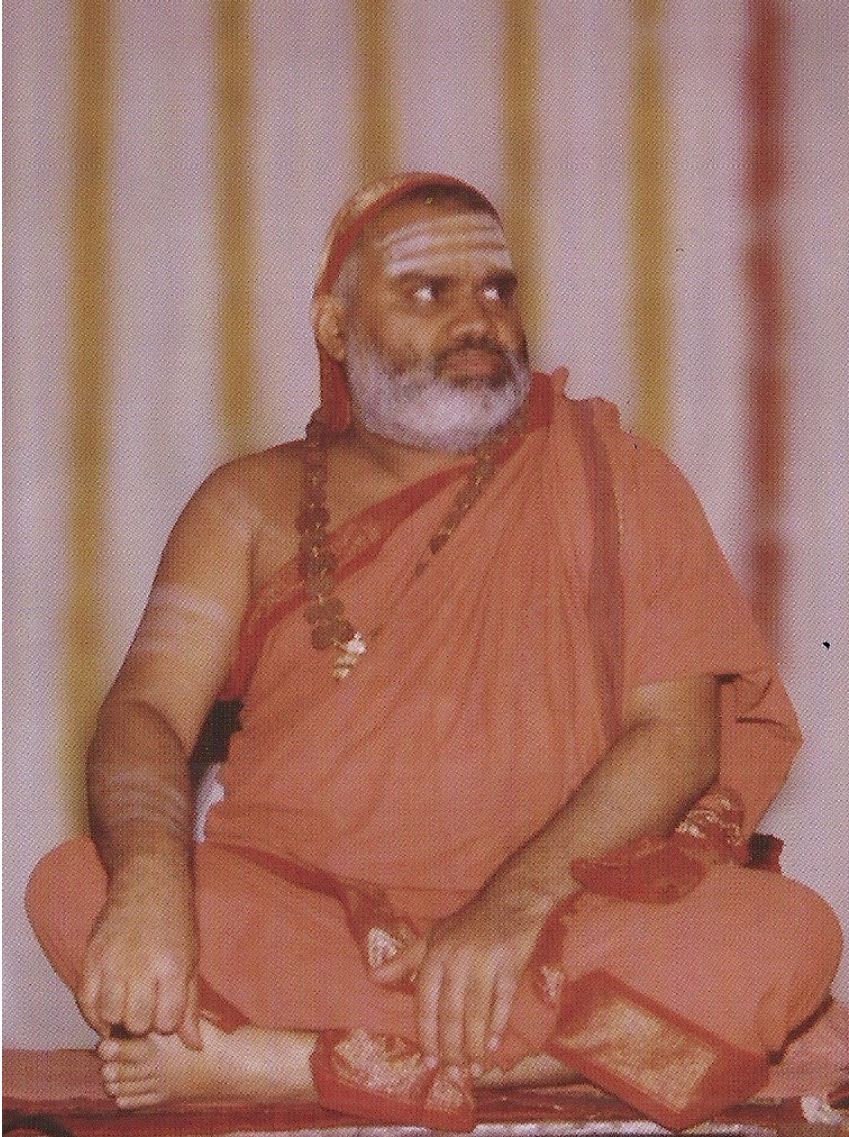
an e-magazine on advaita



ANUGRAHA BHASHANAM

सही मार्ग पर बने रहें

गीता में श्रीकृष्ण परमात्मा कहते हैं:



यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो
जनः

अर्थात्, जो दूसरों को सही राह दिखाने में सक्षम है, लोग उसी का अनुसरण करते हैं। इसलिए उच्च पदों पर बैठे लोगों को हमेशा धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए। यदि वे ज़रा भी चूके तो इसका दूसरों पर भी बहुत बुरा असर पड़ेगा।

कालिदास के रघुवंश में महाराज दिलीप ने 99 अश्वमेध यज्ञ पूरे कर लिए थे और सौवां यज्ञ शुरू कर रहे थे। इसके पूरा होने पर उन्हें इंद्र का पद प्राप्त हो सकता था।

लेकिन देवेन्द्र, जो ऐसा नहीं चाहते थे, ने यज्ञ-घोड़े पर कब्जा कर लिया।

इस पर महाराज दिलीप के पुत्र युवराज रघु, देवेन्द्र से कहते हैं:

पथः श्रुतेर्दर्शयितार ईश्वरा
मलीमसामाददते न पद्धतिम्

“सज्जन लोग, जिन्हें दूसरों को सही रास्ता दिखाना है, वे स्वयं गलत कामों में लिप्त नहीं होंगे। क्या वे ऐसा करेंगे?”

इसलिए, मनुष्य हर परिस्थिति में धर्म मार्ग पर चलना चाहिए। दूसरी ओर, जो इसे भूल जाता है और यह सोचकर गलत काम करता है कि कोई उससे सवाल नहीं करेगा, उसका कोई सम्मान नहीं करेगा।

सभी लोग इस सत्य को समझें और अपनी स्थिति की परवाह किए बिना, सन्मार्ग पर चलें और श्रेय प्राप्त करें।

जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

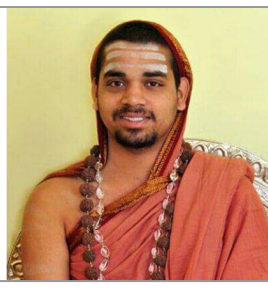


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

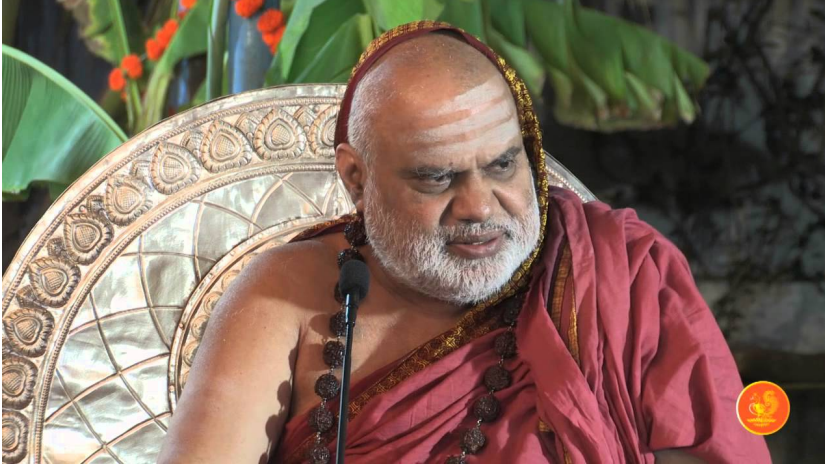


an e-magazine on advaita



ANUGRAHA BHASHANAM

स्वच्छ, पवित्र मन ईश्वर को प्रतिबिम्बित करता है



भगवान सब कुछ जानते हैं। वे हर जगह हैं। वे परिवर्तन, सृजन, विनाश, समय और कारण से परे हैं। वे शाश्वत हैं। प्रह्लाद जैसे कट्टर भक्त उन्हें हर जगह देखते हैं। ऐसे व्यक्ति के मन से भी भगवान गायब नहीं होते।

गीता में भगवान कहते हैं:

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।

तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥

लेकिन आजकल कुछ लोग पूछते हैं: “अगर परमेश्वर हर जगह है, तो उसकी महिमा हर जगह क्यों नहीं दिखाई देती?”

श्री शंकर भगवत्पादाचार्य उत्तर देते हैं:

सदा सर्वगतोऽप्यात्मा न सर्वत्रावभासते ।

बुद्धावेवावभासते स्वच्छेषु प्रतिबिम्बवत् ॥

यद्यपि भगवान सर्वव्यापी हैं, फिर भी उनकी कृपा केवल शुद्ध बुद्धि द्वारा ही अनुभव की जा सकती है। शुद्ध बुद्धि वह है जिसमें सभी वासनाएँ (पूर्व प्रवृत्तियाँ और संस्कार) नष्ट हो गई हों और इच्छाएँ समाप्त हो गई हों। गुरु के उपदेश के फलस्वरूप व्यक्ति का मन निर्मल हो गया हो। ऐसा व्यक्ति ही भगवान की कृपा से लाभान्वित हो सकता है।

उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति अपने चेहरे का प्रतिबिंब केवल दर्पण में ही देख सकता है, लकड़ी या दीवार में नहीं। प्रतिबिंब भी इस बात पर निर्भर करेगा कि दर्पण कितना साफ और स्वच्छ है। परमात्मा भी ऐसा ही है। उनकी उपस्थिति और कृपा व्यक्ति के मन की शांति के अनुरूप होगी।

यथा हि श्लोके तुल्येऽपि मुखसंस्थाने न काष्ठकुड्यादौ मुखं आविर्भवति, आदर्शादौ तु स्वच्छे स्वच्छतरे च तारतम्येन आविर्भवति ; तद्वत् ॥

सभी लोग इसे अच्छी तरह समझें, साधना के माध्यम से अपने मन को शुद्ध करें और आत्म-साक्षात्कार की ओर प्रगति करें।

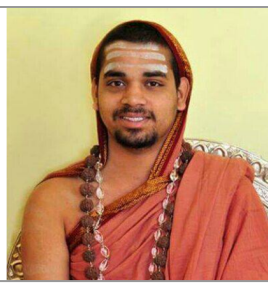


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

ANUGRAHA BHASHANAM

केवल उन लोगों को परामर्श दें जो स्वीकार करने के लिए इच्छुक हैं

इस दुनिया में सभी लोग सभी बातें नहीं जानते। हमारे पूर्वजों ने इस तथ्य को इस प्रकार बताया है: न हि सर्वः



सर्व जानाति। कोई व्यक्ति कुछ जानता हो सकता है, और कुछ नहीं भी जानता हो सकता है। जो हम नहीं जानते, उसे हमें दूसरों से सीखना चाहिए, और जो हम जानते हैं, उसे दूसरों को बताना चाहिए। लेकिन कुछ लोग दूसरों से सीखने के लिए इच्छुक नहीं होते। हमें ऐसे लोगों को सलाह देने का प्रयास नहीं करना चाहिए। वे न केवल हमारी अच्छी बातों को नकारेंगे, बल्कि हमारा अपमान भी करेंगे।

श्रीमद् रामायण का उदाहरण लीजिए। विभीषण ने रावण को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया, लेकिन रावण ने उनकी सलाह को अनसुना कर दिया और विभीषण को अपमानित किया।

इसी प्रकार, महाभारत में कई लोगों ने दुर्योधन को धर्म का मार्ग सिखाने का प्रयास किया; लेकिन उसने सभी परामर्शों की अवहेलना की। हमें ऐसे लोगों को शिक्षित करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

यदि आप किसी सफ़ेद कपड़े को रंग से रंगते हैं तो वह रंग को सोख लेता है, लेकिन रंगीन कपड़ा किसी अन्य रंग को आसानी से स्वीकार नहीं करता। इसलिए हमें केवल उन्हीं को सलाह देनी चाहिए जो हमारी बात मानने को तैयार हों। बाकी लोगों को सलाह देने से निवृत्त होना ही बेहतर है।

वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम् ।
स्थायी भवति चात्यन्तं रागः शुक्लपटे यथा ॥

जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी



Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



॥आत्मबोधः॥

॥ātmabodhaः॥

तपोभिः क्षीणपापाणां शान्तानां वीतरागिणाम् ।

मुमुक्षूणामपेक्ष्योऽय-मात्मबोधो विधीयते ॥ १ ॥



मैं आत्म-बोध नामक
आत्म-ज्ञान-ग्रन्थ की रचना उन लोगों के
लिए कर रहा हूँ, जिन्होंने तपस्या द्वारा
अपने को शुद्ध कर लिया है, जिनका हृदय
शान्त और स्थिर है, जो तृष्णाओं से मुक्त
हैं और मोक्ष के इच्छुक हैं।

जगद्गुरु शंकराचार्य
परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री
भारती तीर्थ महास्वामीजी

बोधोऽन्यसाधनेभ्यो हि
साक्षान्मोक्षैकसाधनम् ।

पाकस्य वह्निवज्ज्ञानं विना मोक्षो न

सिध्यति ॥ २ ॥

जैसे अग्नि ही भोजन पकाने का प्रत्यक्ष कारण है, वैसे ही इसके बिना मोक्ष नहीं मिल सकता। अन्य सभी
साधनाओं की तुलना में आत्मज्ञान ही मोक्ष का प्रत्यक्ष साधन है।

अविरोधितया कर्म नाऽविद्यां विनिवर्तयेत् ।

विद्याविद्यां निहन्त्येव तेजस्तिमिरसङ्घवत् ॥ ३ ॥

कर्म अज्ञान को नष्ट नहीं कर सकता, क्योंकि यह अज्ञान के साथ संघर्ष या विरोध में नहीं है। ज्ञान वास्तव में
अज्ञान को नष्ट करता है जैसे प्रकाश गहन अंधकार को नष्ट कर देता है।

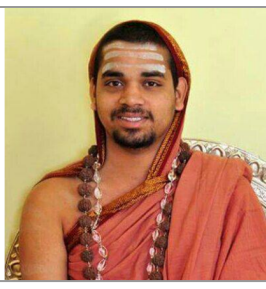


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



Our Website link : <https://voiceofjagadguru.com/voj/>

Telegram Channel : <https://t.me/voiceofjagadguru>

Instagram Channel :

https://www.instagram.com/stories/voice_of_jagadguru_voj/3601249542534134684?igsh=MW90YW13N2c5b2hqaA==

WhatsApp Community Channel: <https://chat.whatsapp.com/Ly4wlaTu8Kc3sjiEYU8KGu>

YouTube Channel : <https://youtube.com/@jagad-guru-channel?si=brkLFqiz8sZJ6UII>

Editorial Board		
Sri P A Murali	Hon' Advisor	Administrator & CEO, Sri Sringeri Mutt & It's Properties, Sringeri
Sri S N Krishnamurthy	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri Tangirala Shiva Kumara Sharma	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri B Vijay Anand	Web Director	Coimbatore
Smt B Srimathi Veeramani	Web Asst Director & Chief Editor	Tirunelveli
Sri K M Kasiviswanathan	Hon' Editor	Tirunelveli